**NEWS CLIPPING: 22 & 27.11.2017**

**THE TRIBUNE**

# Teacher's flood response system used in USA

FARIDABAD, NOVEMBER 27

Dr Sanjeev Goyal, assistant professor at YMCA University of Science and Technology here, has developed a flood response model for the USA.

Dr Goyal, who developed the model as a post-doctoral scholar at University of Pittsburgh, Pennsylvania (US), says the American Red Cross (ARC) had effectively used the model to tackle the situation in Oklahoma and Missouri states during floods.

The ARC took the help of this model to have an initial estimate of funds needed for shelter and food in the affected areas. The local authorities are also planning to use this model to prepare a disaster response plan in the areas affected by frequent floods.

"The model can forecast the demand for food and shelter requirements after major floods. It helps the authorities to initiate movement of resources to affected areas as an estimate of the needs could be made in advance," he adds. —TNS

The Tribune (Haryana Edition) Tue, epape

**NEWS CLIPPING: 22 & 27.11.2017**

**DAILY POST**

## Dr Sanjeev Goyal develops predictive model of disaster

**CHANDIGARH**: A predictive model of disaster response developed by Dr Sanjeev Goyal, an Assistant Professor at YMCA University of Science and Technology in Faridabad, has proved to be an effective model in the United States of America for making initial resource requirement estimates needed in the areas affected by river's flood. Dr Goyal has developed this model as a postdoctoral scholar in the University of Pittsburgh, Pennsylvania, United States. *PTI*

# YMCA University of Science & Technology

(NAAC Accredited Grade 'A' State University)
Sector 6, Faridabad (HARYANA) – 121006

**NEWS CLIPPING: 22 & 27.11.2017**

**DAINIK JAGRAN**

# डॉ.संजीव गोयल ने आपदा के लिए पूर्वानुमान मॉडल विकसित किया

**जागरण संवाददाता, फरीदाबाद** : वाईएमसीए विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर डॉ.संजीव गोयल द्वारा आपदा राहत प्रतिक्रिया के लिए विकसित पूर्वानुमान मॉडल अमेरिका में नदियों की बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों में जरूरी प्रारंभिक संसाधनों के आकलन में प्रभावी साबित हुआ है। उन्होंने यह मॉडल अमेरिका के पीट्सबर्ग विश्वविद्यालय पेंसिल्वेनिया में अपने पोस्ट डॉक्टरल अध्ययन के दौरान विकसित किया है। पिट्स स्वानसन स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग में सहायक प्रोफेसर(इंडस्ट्रियल इंजीनियरिंग) डॉ. लुईस लुआंग केर्सोन की देखरेख में यह कार्य किया गया। डॉ.गोयल ने नदी की बाढ़ के लिए 186 से अधिक प्रांतों तथा 550 नदियों के पैमानों के आंकड़ों का विश्लेषण किया।

पूर्वानुमान मॉडल का प्रयोग अमेरिका के ओकलाहोमा व मिसौरी राज्यों में इस साल बाढ़ के दौरान प्रयोग किया गया। मॉडल की मदद से अमेरिकन रेडक्रॉस शुरुआती वित्तीय आकलन करने में सफल रहा। इस मॉडल के कारण लोगों के लिए जरूरी आश्रय तैयार करने तथा खाद्य सामग्री का प्रबंध करने में भी काफी मदद मिली। वाईएमसीए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.दिनेश कुमार ने डॉ.संजीव गोयल के अध्ययन की सफलता पर शुभकामनाएं दी है। उन्होंने कहा कि आपदा प्रतिक्रिया के लिए जरूरी संसाधनों के पूर्व आकलन का मॉडल एक महत्वपूर्ण अध्ययन है, जिससे देश में प्रतिवर्ष बाढ़ जैसी आपदाओं से होने वाली मृत्यु दर को कम किया जा सकता है। उनका यह अध्ययन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित एक वर्ष के फैलोशिप कार्यक्रम के अंतर्गत किया गया, जो पिछले साल अक्टूबर में शुरू हुआ था, जिसमें अमेरिकन रेडक्रॉस सोसायटी के गवर्नमेंट ऑपरेशंस मैनेजर माइकल व्हाईटहेड का भी पूरा सहयोग रहा।

अपने मॉडल के बारे में जानकारी देते वाईएमसीए विवि के सहायक प्रोफेसर डॉ. संजीव गोयल।

किसी भी आपदा के प्रारंभिक दिनों में आपदाग्रस्त क्षेत्र में राज्य एवं राष्ट्रीय संसाधनों की पहुंच में देरी होती है, जिसका कारण स्थानीय एजेंसियों द्वारा आकलन में लगने वाला समय होता है। ऐसी स्थिति में जरूरत के मुताबिक संसाधनों को प्रभावित क्षेत्रों तक पहुंचाया जा सकता है, यदि जरूरी अनुमान पहले से मिल सके। पूर्वानुमान मॉडल से इस प्रकार के आकलन आसानी से किए जा सकते है।
**डॉ.संजीव गोयल।**

**NEWS CLIPPING: 22 & 27.11.2017**

**HINDUSTAN**

वाईएमसीए के प्रोफेसर डॉ.संजीव गोयल ने अमेरिका में तैयार किया बाढ़ बचाव मॉडल, अब मोबाइल एप फल्ड तैयार करने में जुटे

# बाढ़ में फंसे लोगों के लिए एप करेगा आपदा प्रबंधन

**आपदा प्रबंध**

फरीदाबाद | वरिष्ठ संवाददाता

बाढ़ में फंसे लोगों का आंकलन और उनके पास तक मदद जल्द पहुंच सकेगी। वाईएमसीए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर डॉ. संजीव गोयल ने बाढ़ प्रबंधन के लिए एक मॉडल तैयार किया है, मॉडल अमेरिका में बाढ़ प्रबंधन में प्रभावी साबित होने का दावा किया है।

अब डॉ. संजीव गोयल इस मॉडल को भारत में उपयोग करने के लिए मोबाइल एप में उतारने में जुटे हैं। बीते वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित एक वर्ष के फैलोशिप कार्यक्रम के तहत अमेरिका गए वाईएमसीए विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर डॉ. संजीव गोयल ने यह सफलता प्राप्त की है।

उन्होंने यह मॉडल अमेरिका के पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय में पोस्टडॉक्टरल अध्ययन के दौरान विकसित किया। पूर्वानुमान मॉडल के आपदा राहत के लिए विभिन्न प्रतिक्रिया और जान-माल का आकलन करने में सक्षम होने का दावा किया गया है। डॉ. संजीव गोयल ने बताया कि मॉडल को मोबाइल एप के रूप में तैयार किया जा रहा है, जो भारत की परिस्थितियों को देखकर तैयार होगा।

फिलहाल पूर्वानुमान मॉडल अमेरिका में नदियों की बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों में जरूरी प्रारंभिक संसाधनों का आकलन करने में प्रभावी साबित हुआ है। अमेरिका में पिट्स स्वानसन स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग में सहायक प्रोफेसर डॉ. लुईस लुआंग केसोन की देखरेख में किया गया यह अध्ययन आपदा प्रतिक्रिया में पूर्वानुमान मॉडल के प्रयोग पर केंद्रित था।

जो बड़े स्तर पर आने वाली बाढ़ के दौरान खाद्य सामग्री और आश्रय जैसी जरूरतों को पूरा करने में प्रभावी साबित हुआ। इस एप के द्वारा बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को बड़ी राहत मिलेगी और वो पहले से खतरा भांपकर बच सकेंगे।

## ऐसे काम करता है मॉडल

डॉ. संजीव गोयल ने बताया कि मॉडल पहले से शहर के आंकड़ों और नदियों के ऊफान की ऊंचाई से गणना करके आंकड़े निकालता है। यह सॉफ्टवेयर मशनी लर्निंग अमेरिका के मौसम विभाग की वेबसाइट से जुड़ा है। जो पहले से फीड किए गए आंकड़ों से गणना करता है। भारत में इसे अपडेट किया जाएगा। मोबाइल एप को गूगल से जोड़ा जाएगा,जो सटीक आंकड़े देगा। एप तैयार होने के बाद आपदा प्रबंधन के अधिकारी और आम लोग इसे मोबाइल में अपलोड कर सकेंगे।

## मोबाइल एप में केवल स्थान अंकित करना होगा

आपदा प्रबंधन के लोगों को एक नियमित रेंज में यह पता लग सकेगा कि इस इलाके में कितने लोग बाढ़ में फंसे हैं? और उनके लिए कितनी खाद्य सामग्री की आवश्यकता होगी? आपदा प्रबंधन के लोगों को यह भी पता लग सकेगा कि कितने आश्रय कहां बनाए जाएं? कितने मकान क्षतिग्रस्त हुए हैं। इसके लिए मोबाइल एप में स्थानीय आपदा प्रबंधक को केवल स्थान अंकित करना होगा और बाढ़ की स्थिति की जानकारी प्राप्त होगी।

## मृत्युदर में कमी आएगी

डॉ. संजीव गोयल।

कुलपति डॉ. दिनेश कुमार और कुलसचिव डॉ. संजय शर्मा ने सहायक प्रोफेसर डॉ. संजीव गोयल को इस सफलता के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. दिनेश कुमार ने कहा कि इस सफलता से वाईएमसीए विश्वविद्यालय का सम्मान बढ़ा है। साथ ही यह मॉडल या एप देश के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इससे बाढ़ आपदाओं से होने वाली मृत्युदर में कमी आएगी। यह मॉडल काफी लोगों की जान बचाने में सक्षम है। साथ इससे वित्तीय प्रबंधन में भी मदद मिलेगी।

**NEWS CLIPPING: 22 & 27.11.2017**

**AMAR UJALA**

# अमेरिका में प्रभावी साबित हुआ बाढ़ आपदा प्रबंधन का पूर्वानुमान मॉडल

**फरीदाबाद।** बाढ़ आपदा प्रबंधन का पूर्वानुमान मॉडल अमेरिका में प्रभावी साबित हुआ है। वाईएमसीए विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर डॉ संजीव गोयल ने इसे तैयार किया है। नदियों की बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों में जरूरी संसाधनों के आकलन में यह प्रयोग सफल हुआ है। मॉडल को अमेरिका के पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय में पोस्ट डॉक्टरल अध्ययन के दौरान तैयार किया गया। दावा किया जा रहा है कि इसके लिए जिस प्रकार के आंकड़ों की जरूरत होती है। यदि उन आंकड़ों को उपलब्ध कराया जाता है तो यह मॉडल देश में तैयार किया जाएगा। चेन्नई जैसी बाढ़ परिस्थिति उत्पन्न होने पर लोगों को सुरक्षित किया जा सकता है। नदी की बाढ़ के लिए 186 से अधिक राज्यों और 550 नदियों के पैमानों के आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन पिट्स स्वानसन स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग के सहायक प्रोफेसर डॉ. लुईस लुआंग केर्सोन की देखरेख में किया गया। यूजीसी द्वारा प्रायोजित एक वर्ष के फैलोशिप कार्यक्रम के तहत इसे अक्तूबर 2016 में शुरू किया गया। इसमें अमेरिकन रेडक्रास सोसाइटी के गवर्नमेंट ऑपरेशंस मैनेजर माइकल व्हाइटहेड का सहयोग मिला। डॉ संजीव गोयल ने बताया कि मॉडल के शुरूआती परिणामों को अमेरिका के ओकलाहोमा एवं मिसौरी राज्य में ग्रीष्मकाल में बाढ़ के दौरान प्रयोग किया गया। यूएस आपदा नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र के माध्यम से जनसांख्यिकीय आंकड़े, राष्ट्रीय मौसम सेवा उन्नत हाइड्रोलॉजी से भौतिक आंकड़े, अमेरिकन रेडक्रास से पर्याप्त ऐतिहासिक आंकड़ों का अध्ययन किया गया। बाढ़ के शुरूआती दिनों में आपदाग्रस्त क्षेत्र में राज्य एवं राष्ट्रीय संसाधनों की पहुंच देरी से होती है। जिसका कारण स्थानीय एजेंसियों की तरफ से आकलन में लगने वाला समय है। पूर्वानुमान मॉडल से अब आकलन आसानी से किया जा सकता है। इस मॉडल को मोबाइल ऐप के रूप तैयार किया जा रहा है। मोबाइल ऐप में स्थानीय आपदा प्रबंधक को केवल स्थान अंकित करना होगा। उसके बाद जानकारी प्राप्त हो जाएगी कि कितने लोगों को निवास की जरूरत होगी। ब्यूरो

**वाईएमसीए विवि के सहायक प्रोफेसर ने तैयार किया मॉडल**